International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 **Issue:** II **Month of publication:** February 2025

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2025.66917

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue II Feb 2025- Available at www.ijraset.com

प्रतीक रूप में पशु-पक्षियों का अंकन: मुद्राओं के आलोक में

डॉ0 धर्मेन्द्र मौर्य
सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग,
शान्ति सशक्तिकरण स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, सिधुआपार , बड़हलगंज, गोरखपुर।

भारत की प्राचीनतम मुद्राएँ अभिलिखित रूप में प्रचलित थीं। इन मुद्राओं पर विविध प्रकार के वानस्पतिक, प्राणि-जगत् व आन्तरिक्ष-प्रतीकों के अंकन मिलते हैं। इन्हीं प्रतीकों के आधार पर प्रायः इन आरम्भिक सिक्कों का वर्गीकरण किया जाता है। ज्ञातव्य है कि कालन्तर में लिखित मुद्राओं के प्रचलन होने पर भी प्रतीकों की परम्परा बनी रहीं। आदि मानव का अपने जीवन के प्रारम्भिक चरण में जिन मानवेत्तर प्राणियों से सामना हुआ, उनमें पशु-पक्षी प्रमुख थे। आरम्भिक समय में मनुष्य जंगलों, कन्दराओं में निवास करता था तथा पशु-पक्षियों का शिकार करके अपना पेट भरता था। कालान्तर में जब मनुष्य ने समूह बनाकर एक स्थान पर रहते हुए कृषि कार्य शुरू किया तो धीरे-धीरे मनुष्य के जीवन-यापन का प्रमुख आधार पशु-पक्षी हो गए। पशुओं का मानव जीवन को सुदृढ़ता प्रदान करने में प्रमुख योगदान रहा है। अतः पशुओं के प्रति मानव की श्रद्धा स्वाभाविक हो गई। मानव ने पशुओं का उपयोग भोजन के साथ-साथ दूध, वस्त्र के लिए खाल, कृषि एवं परिवहन के लिए इनका उपयोग किया जो उस समय मानव के लिए दैवीय महत्त्व से कम न था। मानव जीवन के विविध क्षेत्रों में यथा- धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों इत्यादि में पशुओं के महत्त्व के साक्ष्य हमें प्राचीन भारतीय कला से भी मिलते हैं।
बीज वाक्य: आहत मुद्रा, मूर्ति, नन्दिपद, लांछन, सहेत-महेत

प्राचीन कला में उन सभी पशु-पक्षियों को अंकित किया गया है जो किसी न किसी रूप में मानव से सम्बद्ध रहें है।1 इसी प्रकार प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर पशु-पक्षियों के विविध रूप दर्शाये गये है।

A. वृषभ

वृषभ एक ऐसा पशु प्रतीक है जिसका भारतीय मुद्रा विज्ञान के इतिहास से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित जिन अभिप्रायों का हमें ज्ञान होता है, वृषभ, निश्चय ही उनमें विशिष्ट लक्ष्म है। मुद्रा प्रचलन के साथ ही इस प्रतीक का खुलकर अंकन किया जाने लगा जो आरम्भ में प्रायः अपनी प्राकृतिक गरिमा के कारण मुद्राचालकों का प्रिय अभिप्राय रहा और बाद में अपने प्रतीकत्व के विकास के साथ ही ‘नन्दी’ पद प्राप्त करके शैव-आगम का एक प्रमुख लक्षण सिद्ध हुआ। वस्तुतः प्राचीन भारत की मुद्राओं पर अंकित चिह्नो के अभिप्राय तत्कालीन सांस्कृतिक-जीवन के परिचायक हैं और इस प्रकार प्रस्तुत ‘लांछन’ के अंकन व इसके प्रतीकत्व का अध्ययन मौद्रिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है; क्योंकि आरम्भिक काल से गुप्तोत्तर युग तक इस प्रतीक के मुद्रांकन की एक विशिष्ट परम्परा मिलती है।
वृषभ का प्राचीनतम अंकन सैन्धव सभ्यता के उपलब्ध मुहरों पर हुआ है। हड़प्पा संस्कृति में वृषभ की पूजा प्रचलित थी।2 अश्व, हस्ति और सिंह के साथ वृषभ का अंकन अशोक के स्तम्भों पर हुआ है। पशुओं का अंकन पूर्व वैदिक कालिन समाज से ही प्रचलित रहा है, जो ऐतिहासिक काल तक आते-आते धर्म के साथ पूर्णतः सम्बद्ध हो गया। मानव पशु पूजा में विश्वास करने लगा। उत्तरवैदिक साहित्य में भी सूर्य को वृषभ रूप में दर्शाया गया है। वृषभ को सूर्य का पशु प्रतीक भी माना जाता है।3 साहित्यों में शिव के वाहन वृषभ को नन्दी कहा गया है।4 वृषभ को बल और पौरुष का प्रतीक समझा जाता था, संभवतः इसलिये अथर्ववेद में देवराज इन्द्र को वृषभ कहा गया है।5 वैदिकोत्तर काल में यह शिव के लिए प्रयोग होने लगा था और शिव को भी वृषभ कहा गया है।6
कोसल के सहेत-महेत से प्राप्त आहत सिक्कों पर भी वामामुख वृष का अंकन है।7 मथुरा से मिले मगध जनपद के आहत मुद्राओं पर भी वामाभिमुख वृष है।8 मामदार से प्राप्त चेदि जनपद के तीन भाँति के आहत सिक्कों पर वृषभ का अंकन है।9 मिनेण्डर के ताँबे के सिक्कों पर वृषमुण्ड का अंकन है।10 अवन्ति जनपद की आहृत मुद्राओं से चार प्रतीकों के समूह में एक जोड़ी वृषभ हल-जुआठा के साथ अंकित है, जो नागदा निखात से प्राप्त हुई है। जे0एन0 बनर्जी के अनुसार प्राचीन सिक्कों पर वृषभ का अंकन प्रायः शिव का ही प्रतिनिधित्व करता है।11

©IJRASET: All Rights are Reserved | SJ Impact Factor 7.538 | ISRA Journal Impact Factor 7.894 |

मौर्य काल में भी वृषभ का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शुंग शासकों की मुद्राओं पर वृषभ का स्पष्ट अंकन मिलता है। इन मुद्राओं के पृष्ठभाग पर रश्मियुक्त वृत्त के अन्दर वामाभिमुख वृषभ का स्पष्ट अंकन मिलता है। यौधेय जन की मुद्राओं के अग्रभाग पर बैल खड़ा हुआ है और उसके सामने वेदिका के भीतर ध्वज का अंकन है।12 शक शासकों की मुद्राओं पर भी वृषभ का अंकन मिलता है। शक शासक मोअ द्वारा जारी की गई ताम्र मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर कुकदमान वृषभ का अंकन मिलता है। एजेज की मुद्राओं पर भी ऐसा ही अंकन मिलता है।13 कुषाणकालीन मुद्राओं पर वृषभ को शिव के साथ स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है, जो शिव के वाहन के रूप में प्रदर्शित है। विमकेडफिसस की स्वर्ण एवं ताम्र मुद्राओं के पृष्ठभाग पर नन्दि के साथ त्रिशुलधारी शिव को अंकित किया गया है।14

गुप्त सम्राटों में स्कन्दगुप्त की चाँदी की एक भाँति की सिक्कों के पृष्ठभाग पर वामामुख और दक्षिणामुख दोनों रूपों में वृष का अंकन हुआ है।15 जो गुप्तकालीन सिक्कों पर वृषभ की महत्ता का सूचक है। इस प्रकार भारतीय मुद्राशास्त्र के इतिहास में आरम्भिक काल से लेकर लगभग छठी-सातवीं शताब्दी तक 'वृषभ' जैसे महत्त्वपूर्ण पशु-अभिप्राय के प्रतीकत्व पर निरन्तर देशी-विदेशी राजाओं और राज्यों के सिक्कों पर वृषभ का अंकन विविध रूपों में प्रकाश पड़ता है। अपनी प्राकृतिक गरिमा, सामर्थ्य, शौर्य के कारण 'धर्म' का स्वरूप होकर यह प्रतीक भारतीय मुद्रा-प्रणाली में (शैव परम्परा में) अन्ततः 'शिवत्व' की कल्पना में 'नन्दीत्व' का बोधक सिद्ध हुआ।

B. अश्व

भारतीय कला में अश्व को शक्ति एवं स्फूर्ति का प्रतीक माना गया है। इसका सम्बन्ध प्राचीन भारतीय धर्मों में विभिन्न देवताओं से भी था। बौद्ध तथा जैन धर्म में इसे धार्मिक पशु माना गया है। अश्व का प्राचीनतम अंकन सर्वप्रथम अशोक के सारनाथ स्तम्भ शीर्ष की वेदिका के चारों ओर अंकित सिंह, वृष और हस्ति का प्रत्यक्ष और सौन्दर्य युक्त अंकन हुआ है। अश्व को सूर्य रथ खींचने वाले के रूप में जाना जाता है। अश्व भी गतिशीलता का परिचायक है। आहत मुद्रा के ताम्र प्रकार की मुद्रा पर अश्व का अंकन प्राप्त हुआ है।16

आन्ध्र सातवाहन साम्राज्य के गौतमीपुत्र सातकर्णि, वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावि, यज्ञश्री सातकर्णि के कुछ सिक्कों पर अश्व का अंकन है।17 तदन्तर गुप्तकाल में समुद्रगुप्त (मुद्रा सं0 24) और कुमारगुप्त प्रथम (मुद्रा सं0 28) के कुछ सिक्कों पर यूप के सम्मुख अश्व का अंकन हुआ है।18 वैदिक काल से ही चक्रवर्ती राजाओं के लिये अश्वमेघ यज्ञ एक महत्वपूर्ण धार्मिक कृत्य माना जाता है, उसके लिये जो विधि-विधान है उसी के अनुरूप ही गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त प्रथम के सिक्कों पर यूप के सम्मुख अश्व का अंकन है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इन सिक्कों का अंकन धार्मिक प्रसंग में हुआ और कहा जा सकता है कि उन पर अश्व का अंकन अश्वमेघ का प्रतीक रहा होगा।

C. हस्ति

हस्ति का प्राचीनतम अंकन मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की मोहरों पर देखने को मिलता है।19 हस्ति वैभव और सौभाग्य का सूचक बताया गया है। समुद्र मंथन के समय ऐरावत गज भी निकला, जिसे देवराज इन्द्र को दिया गया। परन्तु पौराणिक काल में देवी लक्ष्मी के साथ भी हस्ति का अंकन प्राप्त हो चुका था।

गजलक्ष्मी की प्रतिमा कला एवं मुद्रा पर प्राप्त होती है। कुछ प्रसंगों में हस्ति को वर्षा से भी जोड़ा जाता है।20 ब्रिटिश संग्रहालय में संरक्षित एक आहत मुद्रा पर एक हाथी को अपने सूँड़ से कुछ उठा कर दाँत पर रखते हुए प्रदर्शित किया गया है।21 आन्ध्र जनपद के सिंगावरम से प्राप्त आहत मुद्राओं पर हाथी प्रायः एक अनिवार्य चिह्न के रूप में अंकित हुआ है।

सातवाहन शासकों के मुद्राओं पर भी हस्ति का अंकन एक प्रमुख चिह्न के रूप में हुआ है। चाँदा और तरहला (दक्षिण भारत) से प्राप्त ताँबे के सभी सिक्कों पर हस्ति सूँड गिराये अथवा सूँड उठाये अंकित किया गया है।22 कुषाण मुद्राओं पर हाथी का अंकन विम कैडफिसेस हुविष्क के वाहन के रूप में हुआ है। गुप्तकाल में कुमारगुप्त प्रथम भी अपने एक सिक्के पर हाथी पर सवार अंकित किये गये है। कुषाण और गुप्त सम्राटों के सिक्कों पर स्पष्ट ही हाथी का अंकन राजवैभव का प्रतीक है।

हस्ति का महत्त्व भारत में ब्राह्मण, बौद्ध और जैन तीनों धर्मों में समान रूप से रहा है। बौद्ध धर्म की अनुश्रूतियों के अनुसार बुद्ध ने अपनी माता मायादेवी के गर्भ में हाथी (छदन्त) के रूप में प्रवेश किया था, जैन अनुश्रुति के अनुसार तीर्थंकर महावीर की माता त्रिशला को उनके जन्म के समय चौदहवें स्वप्न में श्वेत हाथी का दर्शन हुआ था। इस प्रकार हाथी को जैन धर्म में महावीर और बौद्ध धर्म में बुद्ध का प्रतीक माना गया है। ब्राह्मण धार्मिक अनुश्रूति के अनुसार शिव द्वारा गजासुर के संहार किये जाने की कथा पुराणों में मिलती है। शिव सम्बन्धी दूसरी अनुश्रूति में गणेश के कटे खण्ड पर हाथी का मुण्ड लगाये जाने की बात कही गयी है। ब्राह्मण धर्म में हाथी दिशा का प्रतीक माना जाता है। साथ ही यह श्री और ऐश्वर्य का प्रतीक भी है, इसका सम्बन्ध लक्ष्मी से जोड़ा गया है। हाथियों द्वारा जल से लक्ष्मी का अभिषेक भारतीय कला का एक प्राख्यात प्रतीक है। श्री लक्ष्मी की महत्ता मौर्योत्तर कालीन कला में विशेष रूप से देखने में आता है।

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue II Feb 2025- Available at www.ijraset.com

D. सिंह

भारतीय कला में सिंह का सर्वप्रथम अंकन अशोक के स्तम्भ शीर्ष में देखने को मिलता है वहाँ शीर्ष के ऊपर एकाकी अथवा चारों दिशाओं में मुँह किये चार सिंहों के रूप में मिलता है। सिन्धु सभ्यता की कला में बाघों का अंकन सर्वाधिक मुद्राओं एवं मुहरों पर मिलता है। एक मुद्रा पर एक मनुष्य वृक्ष की शाखा पर बैठा हुआ दिखाया गया है तथा शाखा के नीचे खड़ा व्याघ्र उसे देख रहा है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त पशुपति की मुद्रा में व्याघ्र को पशुपति के दायी तरफ उत्कृष्ट रूप में दिखाया गया है।23 तक्षशिला के जनपदीय सिक्कों पर सिंह बायीं ओर अथवा दायीं ओर मुख किये खड़ा प्रतीत होता है।24 मालवा जनपद के कुछ सिक्कों पर भी वामाभिमुख अथवा दक्षिणाभिमुखी सिंह का अंकन प्राप्त हुआ है।25 उज्जयिनी से प्राप्त एक प्रकार के सिक्के पर तथा कुछ अन्य अभिलेखविहीन सिक्कों पर भी सिंह का अंकन हुआ है।26 यवन राजाओं में पेन्टालियान के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर पेन्टालियान के सिक्के के पृष्ठ भाग पर सिंह का अंकन मिलता है।27 सातवाहन सिक्कों पर भी हमें सिंह का अंकन प्राप्त हुआ है।28 पश्चिमी छत्रपों के कुछ सिक्कों पर सिंह के अंकन की चर्चा पाई जाती है।29

सिंह दुर्गा-वाहन के रूप में सर्वमान्य है, पर इसका सम्बन्ध लक्ष्मी से भी रहा है। गुप्तशासकों की स्वर्ण मुद्राओं पर सिंहवाहिनी श्री लक्ष्मी अंकित है। चन्द्रगुप्त प्रथम के राजारानी प्रकार की मुद्रा के पृष्ठभाग पर वाहन के रूप में चित्रित किया गया है।30 इसी प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिंह निहन्ता प्रकार की मुद्रा के पृष्ठभाग पर भी सिंह को देवी के वाहन के रूप में अंकित किया गया है।31 समुद्रगुप्त के सिक्कों पर भी व्याघ्र निहन्ता प्रकार में सिंह का अंकन है। कुमारगुप्त प्रथम के राजारानी प्रकार की मुद्रा के पृष्ठभाग पर भी सिंह का अंकन वाहन के रूप में दिखाई पड़ता है।32 इस प्रकार सिंह गुप्त शासकों के सिक्कों पर विशेष रूप से अंकित है।

E. मृग

हिरण का भारतीय कला में प्रतीकात्मक महत्त्व का पशु माना जाता है। मृग का अंकन मुद्राओं और मुहरों पर सिन्धु काल से ही मिलता है। हड़प्पा कालीन पशुपति मुद्रा के नीचे की ओर दो हिरणों का अंकन धार्मिक महत्ता का जान पड़ता है।33 कुछ आहत मुद्राओं पर भी मृग का अंकन मिलता है। कुणिन्द जनपद के शासक अमोघभूति के सिक्कों पर मृग का अंकन प्रमुख रूप से हुआ है। यौधेय जनपद के एक प्रकार के सिक्कों पर खड़े हुए मृग का अंकन है।34 कन्नौज से प्राप्त विष्णु देव के सिक्कों पर अर्द्धचन्द्र के ऊपर छलांग लगाते हुए मृग का अंकन है।35 कुषाण शासकों के एक सिक्के में शिव के हाथ में मृग है। अस्तु, वाहन-प्रतीक हिरण जहाँ लक्ष्मी की सर्वव्यापिनी सत्ता का द्योतक है, वहीं उसकी चंचला (गतिशीलता) प्रकृति का भी संकेतक है।

F. पक्षियाँ

प्राचीन काल से ही पक्षी और मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। जिस तरह हम मनुष्य इस धरती का अभिन्न हिस्सा होते है, उसी तरह पशु-पक्षी भी इस प्रकृति का अभिन्न हिस्सा होते है जिनकी वजह से अपनी धरती और भी ज्यादा सुन्दर दिखाई देती है। भारतीय मुद्राओं पर पशुओं के साथ-साथ पक्षियों का अंकन विविध मान्यताओं के अनुरूप दिखाई पड़ता है।

G. मयूर

भारतीय कला में मयूर को युद्ध देवता स्कन्द कार्तिकेय का वाहन बताया गया है। महाभारत की एक अनुश्रुति के अनुसार विष्णु के वाहन गरूड़ ने स्कन्द कार्तिकेय को मयूर वाहन प्रदान किया।36 कार्तिकेय की जो गुप्तकालीन मूर्तियाँ प्राप्त हुई, उन सब में उनका अंकन मयूर के साथ हुआ है। आहत मुद्राओं पर पक्षियों का अंकन व्यापकता से किया गया है। मयूर को इन मुद्राओं पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गोलकपुर निखात से प्राप्त तथा मगध साम्राज्य से सम्बन्धित चाँदी की कुछ प्रकार की मुद्राओं पर भी मयूर का अंकन मिलता है।37 यौधेय शासकों की मुद्राओं पर भी मयूर का अंकन मिलता है, जिसमें मयूर को कार्तिकेय के वाहन के रूप में दर्शाया गया है।

गुप्त शासकों के सिक्कों पर मयूर को राजकीय पक्षी एवं देवता के वाहन के रूप में अंकित किया गया है। सर्वप्रथम कुमारगुप्त के अश्वरोही प्रकार वाले सिक्कों पर मयूर का अंकन मिलता है। इस मुद्रा के पृष्ठभाग पर देवी मयूर को कुछ खिलाती हुई प्रदर्शित की गई है।38 कुमारगुप्त का नाम कार्तिकेय से जुड़ा हुआ था। कार्तिकेय का वाहन मयूर होने के कारण कुमारगुप्त ने मयूर प्रकार की मुद्राएं चलायी। कुमारगुप्त के उत्तराधिकारी स्कन्दगुप्त39 और बुद्धगुप्त40 ने नृत्यरत मयूर का अंकन कराया। कुमार की तरह स्कन्द भी कार्तिकेय का ही नाम है। इसी प्रकार बुद्धगुप्त की रजत मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर पंख फैलाये मयूर का अंकन मिलता है। इस प्रकार मयूर का अंकन प्राचीन मुद्राओं में विविध रूपों में मिलता है।

H. गरूड़

भारतीय मुद्राओं में गरूड़ पक्षी का विशिष्ट स्थान है। प्राचीन काल से ही गरूड़ पक्षी को वैष्णव धर्म का प्रतीक माना गया है। हड़प्पा की एक मुद्रा पर गरूड़ को दिखाया गया है, जिसमें गरूड़ के फैले हुए पैरों के ऊपर दो सर्पों का भी अंकन है।

ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue II Feb 2025- Available at www.ijraset.com

आह्त मुद्राओं पर गरूड़ का अंकन मिलता है। मुद्राओं में सर्वप्रथम पंचाल शासक विष्णुमित्र के सिक्कों पर मिलता है। इसमें गरूड़ को दोनों हाथों से सांप पकड़े हुए दिखाया गया है।41 कुषाण काल में गरूड़ को स्वतन्त्र अंकन के साथ-साथ विष्णु के वाहन के रूप में भी प्रदर्शित किया गया है। गुप्त वंश के शासकों की धनुर्धारी प्रकार की मुद्रा पर गरूड़ का अंकन मिलता है। गरूड़ गुप्त सम्राटों का राजचिह्न था, ऐसा समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में अंकित ‘गरूत्मदंक अंक’ से ज्ञात होता है।42 चन्द्रगुप्त द्वितीय की धनुर्धारी प्रकार वाली मुद्राओं पर गरूड़ध्वज का अंकन मिलता है।43 सामान्यतः पश्चिमी भारत में रजत मुद्राओं पर गरूड़ध्वज की आकृति चन्द्रगुप्त द्वितीय से स्कन्दगुप्त तक रही है। कुमारगुप्त प्रथम के धनुर्धारी प्रकार की कुछ मुद्रा पर गरूड़ध्वज को अंकित किया गया है। कुमारगुप्त की ताम्र व रजत मुद्राओं पर भी गरूड़ का स्पष्ट चित्रण मिलता है। कुमारगुप्त प्रथम के बाद के सभी शासकों के कुछ सिक्कों पर गरूड़ का अंकन मिलता है जो गुप्त शासकों के वैष्णव धर्मानुयायी होना सिद्ध करता है। गुप्त सम्राटों के इन सिक्कों और मोहरों के अतिरिक्त अन्यत्र राजघाट से प्राप्त एक भांति के मोहरों पर गरूड़ का अंकन हुआ है।44

I. उलूक

आहत मुद्राओं पर अन्य पशु एवं पक्षी के समान उलूक का अंकन है। नागपुर संग्रहालय में संरक्षित 65 रजत आहत मुद्राओं पर उलूक का अंकन है।45 ऋग्वैदिक काल में उलूक को मृत्यु का देवता यम का सन्देश वाहक कहा गया है।46 उलूक को सूर्य के प्रकाश में दिखायी नहीं पड़ता है। सूर्य का प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है, अतः उलूक का सम्बन्ध अंधकार (अज्ञानता) से है।
उलूक को एथेना का प्रतीक माना जाता है तथा भारतीय परम्परा में उलूक लक्ष्मी का वाहन है। उलूक रात्रिचर पक्षी माना जाता है, जो भारतीय लोक परम्परा में जादू-टोना से सम्बद्ध है, उलूक को मनहूस भी माना जाता है। जादू टोने में उलूक की बलि दी जाती है। उलूक का बोलना अशुभ माना जाता है। उलूक का अंकन मेनाण्डर के सिक्कों पर अंकित है।47

J. कुक्कुट

कुक्कुट को कला में हम सिन्धुकाल से ही देखते है जो अन्य पक्षियों के साथ दिखाई पड़ता विभिन्न शासकों की मुद्राओं से कुक्कुट की महत्ता सिद्ध होती है। आह्त सिक्कों पर भी कुक्कुट का अंकन स्पष्ट रूप से मिलता है।48 अगरतल्ला से प्राप्त कुछ आहत सिक्कों पर अन्य प्रतीकों के साथ कुक्कुट का अंकन भी मिलता है। महाभारत में एक विशाल कुक्कुट को लाल गुच्छे के साथ स्कन्द कार्तिकेय से सम्बद्ध किया गया है।49 स्कन्द कार्तिकेय का विवाह देवसेना से हुआ इसी समय इन्हें उपहार स्वरूप रक्तवर्णी कुक्कुट प्राप्त हुआ।50 इस प्रकार कुक्कुट के माध्यम से स्कन्द कार्तिकेय, सूर्य देवता से सम्बन्धित दिखायी पड़ते है, क्योंकि कुक्कुट सूर्योदय का प्रतीक बताया गया है।51 यौधेय शासकों के प्रारम्भिक सिक्कों पर मयूर से पहले कुक्कुट का अंकन था। मयूर और कुक्कुट किस प्रकार युद्ध देवता स्कन्द कार्तिकेय के साथ सम्बद्ध हुए इसका उल्लेख के0के0 दास गुप्ता के अपने ग्रंथ में किया है।52 चतुर्थ सदी ई0 में कुक्कुट का महत्त्व कम हो गया तथा मयूर को वाहन व कुक्कुट को आयुध के रूप में मान्यता मिल गई।53

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भारतीय कला में पशु-पक्षियों का प्रारम्भिक काल से ही स्वतंत्र अंकन किया गया बाद में विभिन्न शासकों द्वारा अपनी-अपनी मुद्राओं पर विभिन्न देवताओं के वाहन एवं प्रतीक के रूप में अंकन प्रारम्भ हो गया जिनका विंहगम दृश्य गुप्त, गुप्तोत्तर तथा मध्यकाल में दिखाई देता है। भारतीय सिक्कों पर पशु-पक्षियों का अंकन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के साथ-साथ अलंकरण एवं समृद्धि की दृष्टि से भी अंकित किया गया जिसकी महत्ता आधुनिक समय में भी देखने को मिलता है।

संदर्भ सूची

[1] सिंह, दिलीप कुमार, प्राचीन भारतीय कला में प्रकृति पूजा, स्वाति प्रकाशन 2012, पृ0 51
[2] मार्शल, जान, मोहनजोदड़ों एण्ड इंडस सिविलाइजेशन, जिल्द-1, पृ0 72
[3] श्रीवास्तव, वी0सी0, प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवं प्रतिमा विज्ञान, 1954, पृ0 154
[4] एलीमेन्ट्स ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, भाग दो, पृ0 460
[5] अथर्ववेद, 9/49
[6] मोनियर विलियम्स, मोनियर संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, 1899 पृ0 10-12
[7] गुप्ता, पी0एल0, पंच मार्क क्वायन्स, फलक 1
[8] गुप्ता, पी0एल0, पंच मार्क क्वायन्स, फलक 46
[9] गुप्ता, पी0एल0, पंच मार्क क्वायन्स, फलक 57
[10] ह्वाइटहेड मुद्रासूची पंजाब क्यू0, पृ0 61
[11] नरेन्द्र नाथ लॉ,इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टरली, खण्ड-16, 1994 पृ0 4
[12] संतोष कुमार वाजपेयी, ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, 1997, पृ0 50
[13] गुप्ता, पी0एल0, भारत के पूर्व कालीक सिक्के, 2006, पृ0 171
[14] वही, पृ0 209

[15] जर्नल ऑफ द न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, खण्ड-22, 1960 पृ0 192
[16] सी0ए0एस0आर0, 14, पृ0 23
[17] रैप्सन, मुद्रासूची, आन्ध्र, पृ0 38'39, फलक 6, 7
[18] एलन, मुद्रासूची, गुप्त साम्राज्य, पृ0 68
[19] एटुअर्ट पिगेट, प्री0 हिस्टोरिक इण्डिया, पृ0 157
[20] सिंह, शत्रुघ्न शरण, अर्ली क्वायंस ऑफ नार्दन इण्डिया, पृ0 8, 9
[21] एलन, जे0, इण्डियन क्वायंस एक्वायर्ड दि ब्रिटिश म्यूजियम, 16, प्लेट 8
[22] रैप्सन, मुद्रासूची, आन्ध्र, पृ0 1, 3, 17, 43, 44, 46, 48, फलक क्रमशः 1, 4, 77, 78
[23] थपल्याल, किरण कुमार एवं एस0पी0 शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1975, पृ0 117
[24] एलन, जॉन कैटलाग ऑफ द इण्डियन क्वायन्स इन द ब्रिटिश म्यूजियम, 1989 पृ0 223-226, 235, 237
[25] स्मिथ, वी0ए0, कैटलाग ऑफ द क्वायन्स इन इण्डियन म्यूजियम, 1906 पृ0 172
[26] एलन, जॉन, कैटलाग ऑफ द इण्डियन क्वांयस इन द ब्रिटिश म्यूजियम,1989 पृ0 283
[27] ह्वाइटहेड, आर0बी0, कैटलाग ऑफ द क्वायंस इन पंजाब म्यूजियम, ज्ञान प्रकाशन पृ0 16
[28] रैप्सन, ई0जे0, कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ0 2, 4, 10, 24
[29] ज0 न्यू. सो0ई0, खण्ड-23, पृ0 340
[30] एलन, जॉन कैटलॉग ऑफ द क्वायंस इन द ब्रिटिश म्यूजियम, एन्शियण्ट इण्डिया, 1989 पृ0 140, फलक 8, चित्र सं0 17
[31] अल्तेकर, ए0एस0, गुप्तकालीन मुद्रायें, पृ0 76-77, फलक 6, चित्र सं0 1-3
[32] बायाना निधि, फलक संख्या 13, 14
[33] थपल्याल, किरण कुमार एवं एस0पी0 शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1975, पृ0 180
[34] एलन, जॉन, कैटलॉग आफ द क्वायंस इन द ब्रिटिश म्यूजियम, एन्शियण्ट इण्डिया, 1989 पृ0 273-75, फलक 40, 20
[35] वही, पृ0 147
[36] महाभारत, 9, 46, 5
[37] गुप्ता, पी0एल0, भारत के पूर्वकालिक सिक्के, वि0वि0 प्रकाशन वाराणसी 2014 पृ0 69-74-76
[38] वही, पृ0 170
[39] एलन, मुद्रासूची, गुप्त साम्राज्य, पृ0 129, फलक 21
[40] अल्तेकर, ए0एस0 क्वायनेज ऑफ गुप्त एम्पायर,1957 पृ0 279, फलक 18
[41] पाण्डेय, प्रभाकर, प्राचीन भारतीय कला में प्रतीक, 2001, पृ0 182
[42] सलेक्ट इंशक्रिप्शंस-प्रयागप्रशस्ति, पंक्ति-24
[43] अल्तेकर, ए0एस0, गुप्तकालीन मुद्राएं, पृ0 59, 60, फलक 11, 14
[44] जर्नल ऑफ द न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, खण्ड 3, पृ0 73, फलक 5
[45] वही, खण्ड-10, पृ0 75
[46] मैक्डोनाल्ड, ए0ए0 वैदिक इण्डेक्स ऑफ नेम एण्ड सबजेक्टस, वाराणसी, 1958, पृ0 125
[47] लाहरी ए0एन0, कारपस ऑफ इन्डोग्रीक क्वायन्स, पाउडर पब्लिकेशन, कलकत्ता, 1965, पृ0 209
[48] एनल, जॉन, कैटलॉग ऑफ द क्वायंस इन द ब्रिटिश म्यूजियम, एन्शियण्ट इण्डिया, 1989 पृ0 51, क्रम संख्या 56-58
[49] मजूमदार, आर0सी0, क्लासिकल एकाउंट ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, 1960, पृ0 468
[50] विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 3.71.55
[51] सहाय, भगवंत, आइकनोग्राफी ऑफ माइनर हिन्दू एण्ड बुद्धिस्ट डिटिज, अभिनव प्रकाशन दिल्ली 1929 पृ0 102
[52] दासगुप्ता, के0के0, ट्राइबल हिस्ट्री ऑफ एन्शियंट इण्डिया, 1974 पृ0 220
[53] पाण्डेय, प्रभाशंकर, प्राचीन भारतीय कला में प्रतीक, शारदा प्रकाशन 2001, पृ0 186

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS
45.98

IMPACT FACTOR:
7.129

TOGETHER WE REACH THE GOAL
IMPACT FACTOR:
7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH
IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)